

संक्षेप

लखनऊ के रिंग रोड का लोकार्पण करेंगे प्रधानमंत्री मोदी

लखनऊ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोमवार को दावा किया कि मार्च के दूसरे सप्ताह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश की जिन परियोजनाओं का लोकार्पण करेंगे उसमें लखनऊ की रिंग रोड परियोजना भी शामिल होगी। प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को दिल्ली से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से 41,000 करोड़ रुपये से अधिक की लगभग 2,000 रेलवे बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इसमें उत्तर प्रदेश के गोमती नगर रेलवे स्टेशन को विश्व स्तरीय बनाने सहित कई अन्य परियोजनाएं शामिल हैं। इस मौके पर यहां गोमतीनगर में आयोजित एक समारोह में संबोधित करते हुए स्थानीय सांसद एवं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, “लखनऊ संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के विकास का जहां तक प्रश्न है, उसके बारे में बहुत विस्तार से बातने की आवश्यकता नहीं है, लोगों को इसका अनुभव हो रहा होगा।” उन्होंने कहा, “यहां पर कुछ एक या दो पुल का निर्माण जारी है। आठ या नौ पुल स्वीकृत हैं जिन पर काम शुरू किया जाना है। साथ ही 104 किलोमीटर की आठ लेन वाली रिंग रोड का निर्माण हो रहा है, इसमें विलंब हुआ है लेकिन अगले तीन-चार दिन में काम पूरा हो जाएगा। रक्षा मंत्री ने कहा, “मार्च के दूसरे सप्ताह में जब प्रधानमंत्री जी देश की परियोजनाओं का लोकार्पण करेंगे तो उसी दौरान लखनऊ की रिंग रोड का भी लोकार्पण किया जाएगा।” राजनाथ सिंह ने कहा कि आज के कार्यक्रम में सिर्फ उत्तर प्रदेश में लगभग 1876 करोड़ की परियोजनाओं का लोकार्पण व शिलान्यास किया गया और उसमें भी अकेले 378 करोड़ रुपये की गोमतीनगर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की योजना है।

स्कूटर और बाइक सवार हो जाएं सावधान! नहीं है एचएसआरपी, तो जल्द होगी कार्रवाई

संजय बाटला

हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (एचएसआरपी) अब लगभग सभी राज्यों में अनिवार्य हो गई है। इसका मकसद वाहन सुरक्षा बढ़ाना और रजिस्ट्रेशन प्रॉसेस (पंजीकरण प्रक्रिया) को सुव्यवस्थित करना है। उत्तर प्रदेश में भी जल्द ही सभी वाहनों के लिए एचएसआरपी टेस्ट शुरू हो जाएगा।

नई दिल्ली। हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (एचएसआरपी) अब लगभग सभी राज्यों में अनिवार्य हो गई है। इसका मकसद वाहन सुरक्षा बढ़ाना और रजिस्ट्रेशन प्रॉसेस (पंजीकरण प्रक्रिया) को सुव्यवस्थित करना है। उत्तर प्रदेश में भी जल्द ही सभी वाहनों के लिए एचएसआरपी टेस्ट शुरू हो जाएगा। परिवहन आयुक्त ने आरटीओ और एसआरटीओ को एचएसआरपी प्लेटों के लिए वाहन परीक्षण प्रक्रिया को तेज करने के लिए कहा है। इसमें सबसे बड़ी चुनौती दोपहिया वाहनों की है। रिपोर्टों के मुताबिक, राज्य में 2 करोड़ से ज्यादा दोपहिया वाहन ऐसे हैं जिनमें अभी भी एचएसआरपी नंबर प्लेट नहीं लगी है। यूपी में एचएसआरपी नंबर प्लेट के बिना वाहनों पर 5000 रुपये का जुर्माना लगाया जा सकता है।

एचएसआरपी प्लेट क्या है?

एचएसआरपी एक विशेष प्रकार की वाहन पंजीकरण प्लेट है, जिसका मकसद पारंपरिक प्लेटों की तुलना में वाहनों को चोरी और दुरुपयोग से बचाना है। एचएसआरपी प्लेट

एल्युमिनियम से बनी होती हैं और इन्हें छेड़छाड़ और अनधिकृत हटाने से रोकने के लिए विशिष्ट रूप से डिजाइन किया गया है। एचएसआरपी की खासियत इसकी स्थायी पहचान संख्या है, जिसे लेजर के जरिए प्लेट पर अंकित किया जाता है। इसके अलावा, हर प्लेट को अशोक चक्र की नीली क्रोमियम आधारित होलोग्राम और पंजीकरण संख्याओं पर गर्म मुद्रांकित फिक्स ओवरले से सुसज्जित किया जाता है, जो अतिरिक्त सुरक्षा उपाय प्रदान करता है।

परिवहन विभाग द्वारा एचएसआरपी अनिवार्यता का पालन करने वाले वाहन मालिकों के लिए प्रक्रिया को सुव्यवस्थित कर दिया गया है। ट्रांजिशन को आसान बनाने के लिए इंटीग्रेटेड वेब पोर्टल, www.siam.in बनाया गया। इस पोर्टल के जरिए, वाहन मालिक आसानी से अपने एचएसआरपी का ऑर्डर दे सकते हैं, इंस्टॉलेशन के लिए डीलर स्थान चुन सकते हैं और सुविधाजनक इंस्टॉलेशन की तारीख और समय निर्धारित कर सकते हैं। आम तौर पर, आवेदन के 15 से 20 दिनों के भीतर प्लेट तैयार हो जाती है, और निर्दिष्ट डीलर के जरिए शीघ्र ही इंस्टॉलेशन की व्यवस्था की जा सकती है।

एचएसआरपी नंबर प्लेट के लिए आवेदन करने के स्टेप:



<http://www.siam.in> पर जाएं और ऊपरी दाएं कोने में रेबुक एचएसआरपी पर क्लिक करें। नाम, वाहन नंबर, फोन नंबर, ईमेल पता, राज्य और जिला जैसे बुनियादी डिटेल्स भरें। शर्तों से सहमत हो और सबमिट पर क्लिक करें। अपना जिला और वाहन टाइप (2-पहिया, 3-पहिया, 4-पहिया, या वाणिज्यिक वाहन) चुनें, फिर अपना वाहन ब्रांड चुनें। आपको चार वेबसाइटों में से किसी एक पर भेज दिया जाएगा: bookmyhsrp.com, orderyourhsrp.com, getmyhsrp.com, या makemyhsrp.com। अपना वाहन विवरण जैसे नंबर, चैसिस नंबर और इंजन नंबर दर्ज करें। संपर्क के लिए अपना पता, फोन नंबर और ईमेल प्रदान करें। ऑनलाइन भुगतान करें। यदि आप इन-स्टोर फिटिंग का विकल्प चुनते हैं, तो मनपसंद तारीख और समय स्लॉट चुनें। एक बार भुगतान की पुष्टि हो जाने के बाद, आपको एक रिसीट हासिल

होगी। प्लेट फिक्सिंग के लिए स्टोर पर जाने से पहले इसकी एक प्रति अपने पास रखें। आप या तो अपनी प्लेट को अपने घर पर डिलीवर कर सकते हैं या आसान इंस्टॉलेशन के लिए किसी नजदीकी शोरूम या वर्कशॉप में भेज सकते हैं। यहां ध्यान रखने वाली बात यह है कि, ये प्लेटफॉर्म कैश ऑन डिलीवरी की सुविधा नहीं देते हैं, इसलिए पहले से भुगतान करें दें। इन चरणों का पालन करने से आपको सुचारू रूप से अपनी एचएसआरपी नंबर प्लेट हासिल करने में मदद मिलेगी। एसआईएम की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से एचएसआरपी नंबर प्लेट के लिए आवेदन करने के लिए इन चरणों का पूरी तन्मयता से पालन करें। यह वाहन सुरक्षा बढ़ाने और विनियामक जनादेशों के अनुपालन में योगदान देगा।

वाहन मालिकों को, खासकर 1 अप्रैल 2019 से पहले पंजीकृत वाहनों वालों को, एचएसआरपी की आवश्यकता का पालन करना होगा। पुरानी नंबर प्लेटों को नई एचएसआरपी प्लेटों से बदलने में विफल रहने पर परिवहन विभाग द्वारा दंड लगाया जा सकता है। देश भर में एचएसआरपी का कार्यान्वयन वाहन सुरक्षा बढ़ाने और पंजीकरण प्रथाओं में मानकीकरण सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कालका-शिमला रेलमार्ग पर हाइड्रोजन ट्रेन दौड़ेगी



परिवहन विशेष। एसडी सेटी।

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश के कालका-शिमला रेलमार्ग पर जल्द ही हाइड्रोजन ट्रेन दौड़ने लगेगी। नैरोगेज पर दौड़ने वाली यह हाइड्रोजन ट्रेन देश की पहली रेलगाड़ी होगी। कालका-शिमला नैरोगेज ट्रेन परिचालन से पहले ट्रायाल शुरू कर दिए हैं। केंद्र सरकार ने 2024-25 के बजट में उत्तरी रेलवे के हैरिटेज इंफ्रास्ट्रक्चर पर हाइड्रोजन ट्रेन को शामिल किया गया है। इसके लिए कालका-शिमला रेलवे खंड पर हाइड्रोजन ट्रेन चलाने के लिए कालका-शिमला स्टेशनों पर हाइड्रोजन ईंधन स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। इन तीन स्टेशनों पर पानी से हाइड्रोजन

निकालकर ईंधन में बदलने के प्लांट लगाए जाएंगे। इसके लिए कालका-शिमला रेलमार्ग खंड का सर्वे भी किया जा चुका है। मौजूदा समय में इस रेल खंड पर डीजल इंजन से ही ट्रेनें चल रही हैं। हाइड्रोजन को प्रदूषण रहित स्वच्छ ईंधन माना जाता है। हाइड्रोजन ईंधन के इस्तेमाल से हानिकारक गैसों का शून्य उत्सर्जन होता है। सिर्फ जल वाष्प निकलते हैं। जो हरित आवरण में स्वच्छ और पर्यावरण के अनुकूल माने जाते हैं। रेलवे का टार्गेट डीजल से चलने वाले लोकोमोटिव (इंजन) को हाइड्रोजन इंजन में बदलना है। हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेनों को बंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों की तरह ट्रेन मेट के रूप में शुरू करने की योजना है।

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

भारत सरकार

भारत सरकार

धारणा vs तथ्य

SPEED LIMIT 60

धारणा

स्पीड लिमिट का पालन न करने से कोई नुकसान नहीं होता

तथ्य

स्पीड लिमिट में वाहन चलाने से जान और बालान दोनों बच सकते हैं

www.morth.nic.in

MaTThinda

MaTThinda

MaTThinda

morthinda

पीएम मोदी ने 2000 से अधिक रेल परियोजनाओं को राष्ट्र को किया समर्पित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 26 फरवरी को देश की जनता को एक बड़ी सौगात देते हुए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 41 हजार करोड़ रुपये से अधिक की लगभग 2,000 रेलवे बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन कर राष्ट्र को समर्पित किया। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में 2021 जगहों से करीब 40 लाख लोग जुड़े थे। इसमें 11 जगहों से मुख्यमंत्री समेत अन्य विशिष्ट लोग शामिल थे। इससे पहले प्रधानमंत्री ने रेलवे स्टेशनों पर विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करने के महत्व पर जोर दिया। इस प्रयास के तहत एक बड़े कदम के रूप में प्रधानमंत्री अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 553 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास का शिलान्यास किया। 27 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में स्थित इन स्टेशनों का 19,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से पुनर्विकास किया जाएगा। ये स्टेशन शहर के दोनों किनारों को एक साथ मिलाते हुए 'शहर के केंद्र' के रूप में कार्य करेंगे। इन स्टेशनों पर आधुनिक यात्री सुविधाएं उपलब्ध होगी। इनमें छत प्लाजा, सुंदर भूदृश्य, इंटर मॉडल

कनेक्टिविटी, बच्चों के खेलने का क्षेत्र, कियोस्क, फूड कोर्ट आदि शामिल हैं। साथ ही, इन्हें पर्यावरण और दिव्यांगों के अनुकूल पुनर्विकसित किया जाएगा। इन स्टेशन भवनों का डिजाइन स्थानीय संस्कृति, विरासत और वास्तुकला से प्रेरित होगा। इस के अलावा प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश में गोमती

नगर स्टेशन का उद्घाटन किया। लगभग 385 करोड़ रुपये की लागत से इसका पुनर्विकास किया गया है। भविष्य में यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए इस स्टेशन पर आगमन और प्रस्थान सुविधाओं को अलग कर दिया गया है। यह शहर के दोनों हिस्सों को जोड़ता है।

दिल्ली गोल्डन मेट्रो हुआ घोषित. 24KM लंबी लाइन और 15 स्टेशन के साथ दर्जनों इलाके आये रूट पर

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (DMRC) ने मेट्रो के चौथे चरण (फेज 4) के तहत तुगलकाबाद से दिल्ली एरोसिटी कॉरिडोर के रंग में एक महत्वपूर्ण बदलाव की घोषणा की है। पहले इसे सिल्वर लाइन के रूप में जाना जाता था, लेकिन अब इसे गोल्डन लाइन के रूप में पहचाना जाएगा।

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो ने सिल्वर से गोल्डन में रंग बदलने का फैसला दृश्यता यानी विजिबिलिटी बढ़ाने के लिए किया है। मेट्रो के डिब्बों पर चांदी (सिल्वर) का रंग स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता था, क्योंकि उनके स्टेनलेस स्टील के शरीर का रंग भी लगभग चांदी जैसा ही होता है। गोल्डन रंग, चांदी के रंग की तुलना में अधिक प्रमुखता से दिखाई देगा।

गोल्डन लाइन: दूरी और स्टेशन

लगभग 23.62 किलोमीटर लंबी गोल्डन लाइन के कॉरिडोर में कुल 15 स्टेशन होंगे। इस लाइन का निर्माण कार्य

तेजी से चल रहा है और इसके 2025 तक पूरा होने की उम्मीद है। इस कॉरिडोर के बन जाने से इस पूरे क्षेत्र में यातायात और भी सुविधाजनक हो जाएगा।

चौथे चरण के अन्य कॉरिडोर

फ़िलहाल, गोल्डन लाइन के अलावा, मेट्रो के चौथे चरण में दो अन्य कॉरिडोर भी निर्माणाधीन हैं। इनमें जनकपुरी पश्चिम से आरके आश्रम तक मर्जटा लाइन का विस्तार और मजलिस पार्क से

मौजपुर तक पिंग क लाइन का विस्तार शामिल है।

दिल्ली मेट्रो लाइनों की विशिष्ट पहचान

दिल्ली मेट्रो की हर लाइन को एक अलग रंग से पहचाना जाता है। उदाहरण के लिए, येलो लाइन समयपुर बादली से गुडगांव तक जाती है, ब्लू लाइन वैशाली को द्वारका से जोड़ती है, और रेड लाइन नया बस अड्डा से रिटाला तक चलती है।

टैपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

TOLWA

TOLWA

website : www.tolwa.in

Email : tolwadelhi@gmail.com

bathiasanjaybathia@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सेक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020) , एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम - डीएल - 0026470. नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए - 4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063

कॉर्पोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ बड़ोदा दिल्ली 110042

भारत देश की सबसे लंबी ट्रेन, जिसमें लगे है 6 इंजन और 295 डिब्बे, स्टेशन को पार करने में लगाती हैं पूरे 5 मिनट

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हिंदुस्तान प्रति-दिन लाखों लोग भारतीय रेलवे की ट्रेन से यात्रा करते हैं। ट्रेन यात्रा करने का सबसे सस्ता और आरामदायक साधन है। जिससे लोग एक जगह से दूसरी जगह तक बेहद आसानी से यात्रा करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं, हमारे देश की सबसे लंबी ट्रेन कौन सी है?

भारत की सबसे लंबी ट्रेन का क्या नाम है?

ट्रेन की लंबाई कितना किलोमीटर है और ट्रेन में कितने डिब्बे हैं?

ट्रेन में कुल कितने इंजन हैं? *

ट्रेन को अपने गंतव्य स्टेशन तक पहुंचने में कितना समय लगता है?

यदि इनके बारे में आप नहीं जानते तो चलिए आपको इसकी पूरी जानकारी देते हैं।

देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर देश की सबसे लम्बी ट्रेन शुरू की गई थी। इसकी कुल लम्बाई 3.5

किलोमीटर है। इस ट्रेन में 1 या 2 नहीं बल्कि 6 इंजन लगे हैं। इसमें इतने डिब्बे हैं कि खड़े होकर गिनने में आपको बेहद दिक्कत का सामना करना पड़ेगा। इसमें सामान्य ट्रेन की तरह 25-30 डिब्बे नहीं, बल्कि टोटल 295 डिब्बे हैं। पैदल एक छोर से दूसरे छोर तक जाने में आपको कम से कम 1 घंटे से ज्यादा का समय लग जाएगा।

इस सबसे लम्बी ट्रेन का नाम है सुपर वासुकी

अब आप सोच रहे होंगे कि ये कोई सवारी ट्रेन है या मालगाड़ी, जो हां यह एक मालगाड़ी है और भारत देश की सबसे लंबी मालगाड़ी है। इनमें 27000 टन वजन खींचने की क्षमता है। यह ट्रेन छत्तीसगढ़ के कोरबा से चलकर नागपुर के राजनदगांव तक जाती है। इस रास्ते को तय करने में लगभग 11 घंटे का समय लगता है। आपकी जानकारी हेतु बता दें 15 अगस्त 2022 को सुपर वासुकी ने पहली बार 27000 टन

कोयला लेकर छत्तीसगढ़ के कोरबा से चलकर नागपुर के राजनदगांव तक

का सफर तय किया। सुपर वासुकी ट्रेन को एक स्टेशन से गुजरने में

लगभग 5 मिनट लगते हैं और यह 5 सामान्य मालगाड़ी ट्रेन के बराबर है।

जेनेवा मोटर शो में रिनॉल्ट 5 ईवी हुई अनवील, जानिए संभावित कीमत और खासियत



परिवहन विशेष न्यूज

Renault ने Geneva Motor Show में नई Electric Car पेश की है। Renault 5 का प्रोडक्शन वर्जन दिखने और डायमेंशन के मामले में 2021 म्यूनिख ऑटो शो में दिखाए गए कॉन्सेप्ट संस्करण के लगभग समान है। Renault का कहना है कि ये वाहन सामान्य चार वर्षों के बजाय केवल तीन वर्षों में डेवलप किया गया है। आइए इसके बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। पॉपुलर कार निर्माता कंपनी

Renault ने Geneva Motor Show में नई Electric Car पेश की है। फ्रांसीसी कार निर्माता की इस इलेक्ट्रिक कार का नाम Renault R5 है, जो 1972 की बेस्टसेलर ICE कार से इंस्पायर्ड है। यूरोप में निर्मित महंगी इलेक्ट्रिक कारों को टक्कर देने के लिए renault इसकी कीमत 25,000 यूरो के आस-पास रख सकती। आइए, इस EV के बारे में जान लेते हैं।

Renault 5 की खासियत

Renault 5 का प्रोडक्शन वर्जन दिखने और डायमेंशन के मामले में 2021 म्यूनिख ऑटो शो में दिखाए गए कॉन्सेप्ट संस्करण के लगभग समान है। Renault का कहना है कि ये वाहन सामान्य चार वर्षों के बजाय केवल तीन वर्षों में डेवलप किया गया है। ये इलेक्ट्रिक कार Renault Group की स्टैंड-अलोन ईवी सहायक कंपनी Ampere द्वारा लॉन्च की गई पहली कार है।

कहां होगा प्रोडक्शन

इसे ऑटोमेकर के कार और कंपोनेंट कारखानों के इलेक्ट्रिसिटी क्लस्टर के हिस्से के रूप में फ्रांस के डौई में बनाया जाएगा। बैटरियां अगले साल से एनविजन एईएससी से आएंगी, जिसमें क्लेओन, फ्रांस से इलेक्ट्रिक मोटरों भी शामिल होंगी। रेनो का कहना है कि Renault

हुंडई ने यूरोप में अपनी इन 2 गाड़ियों का रोका प्रोडक्शन, जानिए क्या है वजह



हुंडई ने कहा है कि यूरोपीय बाजार के लिए हुंडई i30 N और i20 N मॉडल का उत्पादन आधिकारिक तौर पर बंद हो गया है। हुंडई द्वारा घोषित यह निर्णय 2035 तक ग्राहकों को पूरी तरह से शून्य-उत्सर्जन वाहन लाइनअप प्रदान करने और 2045 तक 100 प्रतिशत कार्बन न्यूट्रलिटी प्राप्त करने के कंपनी के लक्ष्य में निहित है। आइए पूरी खबर के बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। जीरो-एमीशन फ्यूचर के बारे में सोचते हुए Hyundai ने यूरोपीय बाजार में अपनी दो ICE कारों को बंद कर दिया है। कंपनी ने कहा है कि यूरोपीय बाजार के लिए हुंडई i30 N और i20 N मॉडल का उत्पादन आधिकारिक तौर पर बंद हो गया है।

क्यों रुका प्रोडक्शन ?

हुंडई द्वारा घोषित यह निर्णय, 2035 तक ग्राहकों को पूरी तरह से शून्य-उत्सर्जन वाहन लाइनअप प्रदान करने और 2045 तक 100 प्रतिशत कार्बन न्यूट्रलिटी

प्राप्त करने के कंपनी के लक्ष्य में निहित है। इन पेट्रोल-संचालित एन मॉडल के बंद होने का फायदा Ioniq 5 N EV को मिलने वाला है।

i20 N और i30 N की खासियत

ये कदम इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और टिकाऊ प्रथाओं के प्रति व्यापक उद्योग प्रवृत्ति के अनुरूप है। ये ऑटोमोटिव उद्योग के भीतर स्थिरता और कम पर्यावरणीय प्रभाव के लिए वैश्विक प्रयास के अनुरूप है। 2017 में पेश की गई i30 N, 'हॉट हैच' मार्केट में कंपनी का पहला कदम था, जिसने अपने चैंसिस और टर्बोचार्ज्ड इंजन के लिए प्रशंसा प्राप्त की थी।

इसके 2021 फेसलिफ्ट में सुधार आया, जिसमें डुअल-क्लच ट्रॉसमिशन विकल्प और बड़ी हुई शक्ति शामिल है। मिनी सेगमेंट में कंपटीशन करने के लिए, 2021 में पेश किए गए i20 N ने छोटे डायमेंशन, कम वजन और गतिशील क्षमताओं का प्रदर्शन किया, हालांकि ये i30 N की बिक्री के आंकड़ों से मेल नहीं खाती है।

जवान और आर्टिकल 370 में काम कर चुकी फेमस एक्ट्रेस प्रिया मैनी ने खरीदी मर्सिडीज बेंज जीएलजी, जानिए कीमत और खासियत



South Indian Cinema के साथ-साथ Shahrukh Khan की Jawan और Article 370 जैसी फिल्मों में काम कर चुकी फेमस एक्ट्रेस Priya Mani ने अपने गैरराज में एक प्रीमियम एसयूवी को शामिल कर लिया है। Mercedes-Benz GLC मशहूर हस्तियों के बीच एक पॉपुलर पसंद है। ये जर्मन एसयूवी लगजरी कम्फर्ट और परफॉरमेंस के बेहतरीन समावेश के साथ आती है। आइए इसके बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। South Indian Cinema के साथ-साथ Shahrukh Khan की Jawan और Article 370 जैसी फिल्मों में काम कर चुकी फेमस एक्ट्रेस Priya Mani ने अपने गैरराज में एक प्रीमियम एसयूवी को शामिल कर लिया है। उन्होंने हाल ही में Mercedes-Benz GLC खरीदी है, जिसकी कीमत 74.20 लाख रुपये एक्स शोरूम है। इसकी तस्वीरों भी सामने आई हैं।

Mercedes-Benz GLC मशहूर हस्तियों के बीच एक पॉपुलर पसंद है। ये जर्मन एसयूवी लगजरी, कम्फर्ट और परफॉरमेंस के बेहतरीन समावेश के साथ आती है। आपको बता दें कि Priya Mani ने जिस वेरिएंट को चुना है, उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। हालांकि, जीएलसी 300 में 258 एचपी, 400 एनएम 2.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन है, जबकि जीएलसी 220 डी को 2.0-लीटर डीजल इंजन दिया गया है, जो 197 एचपी और 440 एनएम टॉर्क देता है।

दोनों इंजनों को मानक के रूप में 9-स्पीड ऑटोमैटिक गियरबॉक्स और मर्सिडीज के 4मैट्रिक ऑल-क्ली-ड्राइव सिस्टम के साथ जोड़ा गया है। इसके अतिरिक्त, एक 48V माइल्ड-हाइब्रिड सिस्टम और एक एकीकृत स्टार्टर जनरेटर को मानक के रूप में शामिल किया गया है, जो GLC को अतिरिक्त 23 hp और 200 Nm प्रदान करता है।

एसयूवी में अपने पूर्ववर्ती की तुलना में कई अपग्रेड हैं। इसमें बड़ी ग्रिल, दोबारा डिजाइन किए गए हेडलैंप, अपडेटेड फ्रंट और रियर बंपर के साथ फ्रेंस एलईडी रेटल लाइट्स शामिल हैं। केबिन को पूरी तरह से बदल दिया गया, जिसमें एक नई डैशबोर्ड हाउसिंग, एच-स्टैक 11.9-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम और एक 12.3-इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल शामिल है।

TVS HLX 150F ने पार किया 35 लाख यूनिट सेल का आंकड़ा, कंपनी ने ग्लोबल मार्केट में किया लॉन्च

नई TVS HLX 150F में एक ट्रेपेज़ॉइडल एलईडी हेडलैंप बेहतर पकड़ के लिए एक पिलियन हैंडल रेल रियर लोड कैरियर ट्यूबलेस टायर एक सेमी-डिजिटल स्पीडोमीटर और एक फ्रंट डिस्क ब्रेक मिलता है। TVS की विदेशों में मजबूत उपस्थिति है और यह एशिया अफ्रीका लैटिन अमेरिका और यूरोप सहित 80 से अधिक देशों में अपने दोपहिया वाहनों की रेटेल सेल करता है।

नई दिल्ली। TVS Motor Company ने HLX ब्रांड के 10 साल पूरे होने का जश्न मनाते हुए अंतरराष्ट्रीय बाजारों में नई HLX 150F लॉन्च की है। टीवीएस एचएलएक्स लाइन एक दशक पहले अफ्रीका में लॉन्च की गई थी और अब लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के 50 देशों में बिक्री पर है।

TVS HLX 150F का डिजाइन

नई TVS HLX 150F में एक ट्रेपेज़ॉइडल एलईडी हेडलैंप, बेहतर पकड़ के लिए एक पिलियन हैंडल रेल, रियर लोड कैरियर, ट्यूबलेस टायर, एक सेमी-डिजिटल स्पीडोमीटर और एक फ्रंट डिस्क ब्रेक मिलता



है। मोटरसाइकिल को एक कम्प्यूटर रुख मिलता है और नए ग्राफिक्स, तीन रंग विकल्पों और एक ब्लैक बेस थीम के साथ इसे स्पिरेटेड लुक मिलता है।

कंपनी HLX 150F पर नई सीट स्टाइल का भी दावा करती है। नया 150 सीसी इकोथ्रस्ट इंजन आईओसी तकनीक के साथ आता है, जिसके बारे में टीवीएस का दावा है कि ये बेहतर शक्ति, फ्यूल एफिशियंसी और कम मेंटेनेंस के साथ आता है। आपको बता दें कि इसे अभी भी इंडियन मार्केट में नहीं सेल किया जाएगा।

इन देशों में बिकती है TVS HLX 150F

TVS की विदेशों में मजबूत उपस्थिति है और यह एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और यूरोप सहित 80 से अधिक देशों में अपने दोपहिया वाहनों की रेटेल सेल करता है। कंपनी के निर्यात में कुल कारोबार का लगभग 25

प्रतिशत हिस्सा शामिल है।

इंजन

नई TVS HLX 150F एक बड़ी क्षमता वाले इंजन के साथ अधिक शक्तिशाली मोटरसाइकिल है, जिसके बारे में कंपनी का कहना है कि इसमें एक नया 'इकोथ्रस्ट' इंजन, नए सेप्टी फीचर्स और बेहतर सर्पेंशन शामिल हैं। बाइक को नए कलर ऑप्शन और ग्राफिक्स के साथ पेश किया गया है।

2024 हुंडई i20 N Line प्री-फेसलिफटेड वर्जन की तुलना में स्पोर्टियर डिजाइन और अधिक फीचर्स के साथ

नई दिल्ली। Hyundai ने यूरोप में अपनी i20 N Line हॉट हैच के नए संस्करण का अनावरण किया है। दिलचस्प बात यह है कि OEM ने पिछले साल सितंबर में भारतीय बाजार में Hyundai i20 N Line का अपडेटेड वर्जन लॉन्च किया था। अब, कार को अपने नवीनतम अवतार में और अधिक अपडेट मिलने के साथ, आने वाले महीनों में हैचबैक के भारतीय बाजार में आने की उम्मीद है।

डिजाइन अपडेट

2024 Hyundai i20 N Line, प्री-फेसलिफटेड वर्जन की तुलना में स्पोर्टियर डिजाइन और अधिक फीचर्स के साथ आती है। नई i20 में एन लाइन बैजिंग के

साथ एक नए टेक्सचर्ड रेडिएटर ग्रिल, आगे और पीछे एन लाइन-स्पेसिफिक स्पोर्टी बंपर, फ्रंट बंपर और साइड स्कर्ट पर लाल इंस्टर्ट के साथ आती है। कार में नए डिजाइन और क्रोम-गार्निशड टि्वन एर्जॉस्ट के साथ 17 इंच के डायमंड-कट अलॉय व्हील मिलते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि इन सभी कॉस्मेटिक अपडेट के साथ, हुंडई i20 एन लाइन का नवीनतम अवतार उस हैचबैक से बहुत अलग नहीं दिखता है, जो वर्तमान में सितंबर 2023 से भारत में बिक्री पर है। हुंडई ने रैप के लिए कार में चार नए एक्सटीरियर कलर भी पेश किए हैं, जो इसकी अपील को और बढ़ाएंगे। ये नए रंग-लुमेन ग्रे पर्ल, मेटा ब्लू पर्ल, वाइट ब्लू पर्ल और

ल्यूसिड लाइम मेटालिक हैं।

फीचर्स और इंटीरियर

केबिन के अंदर, नई Hyundai i20 N Line को कई अपडेट भी मिलते हैं। इसमें डैशबोर्ड के लिए ऑल-ब्लैक थीम दी गई है, जो स्पोर्टी वाइब को बढ़ाती है। आकर्षक लाल रंग में इंटीरियर कंट्रोल दिए गए हैं। इसके अलावा, नई i20 N Line में परफॉरेट लेंडर और लाल कंट्रास्ट स्ट्रिचिंग के साथ एक स्पेसिफिक N Line मल्टीफ्रैक्शन स्टीयरिंग व्हील मिलता है। अन्य अपडेट में एक स्पोर्टियर गियर शिफ्टर, एल्युमीनियम फिनिश के साथ स्पोर्ट्स पैडल और एन लाइन-विशिष्ट स्पोर्ट्स सीट्स शामिल हैं। अन्य फीचर्स के अलावा,

हैचबैक में मोबाइल कनेक्टिविटी के साथ एक टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, वायरलेस चार्जर, सिंगल-पैन सनरूफ, पूरी तरह से डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, मल्टी-कलर एम्बिएंट लाइट और एक बोस ऑडियो सिस्टम आदि मिलते हैं।

इंजन

Hyundai की इस हॉट हैच का पावरट्रेन अपरिवर्तित है। इसे 6-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स के साथ जोड़े गए 1.0-लीटर टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन से शक्ति मिलती है, जबकि इसमें 7-स्पीड डुअल-क्लच ट्रांसमिशन यूनिट भी उपलब्ध है। ये इंजन 118 bhp की अधिकतम पावर और 172 Nm का अधिकतम टॉर्क पैदा करने में सक्षम है।



2024 Hyundai i20 N Line प्री-फेसलिफटेड वर्जन की तुलना में स्पोर्टियर डिजाइन और अधिक फीचर्स के साथ आती है। नई i20 में एन लाइन बैजिंग के साथ एक नए टेक्सचर्ड रेडिएटर ग्रिल आगे और पीछे एन लाइन-स्पेसिफिक स्पोर्टी बंपर फ्रंट बंपर और साइड स्कर्ट पर लाल इंस्टर्ट के साथ आती है। आइए अपडेटेड 2024 Hyundai i20 N Line के बारे में जान लेते हैं।

मातृभूमि के लिए प्रवासियों का योगदान



ऐसे में अब भारत के तेज विकास और भारत को विकसित देश बनाने के लक्ष्य के पूरा करने के मद्देनजर भारतवर्षियों व प्रवासियों द्वारा तन-मन-धन से आगे सहयोग करने के संकल्प के अभियान को इंडियास्पोरा द्वारा दुनियाभर में आगे बढ़ाया जा रहा है। हम उम्मीद करें कि इस समय यूएई की तरह दुनिया के कोने-कोने के देशों में प्रवासी भारतीय आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में अपना प्रभावी योगदान देते हुए वैश्विक मंच पर भी भारत के हितों की जोरदार हिमायती के साथ भारत के सहयोगी और सहभागी के रूप में रेखांकित होते हुए दिखाई दे रहे हैं, अब वे भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने के सपने को साकार करेंगे।

हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के जायद स्पोर्ट्स सिटी (यूएई) के जायद स्पोर्ट्स सिटी स्टेडियम, अबूधाबी में भारतीय समुदाय के द्वारा आयोजित ‘अहलन मोदी’ (हैलो मोदी) कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि जिस देश की मिट्टी में आपने जन्म लिया, मैं उस मिट्टी की खुशबू आपके लिए लेकर आया हूँ। इस समय भारत और संयुक्त अरब अमीरात मिलकर 21वीं सदी का नया इतिहास लिख रहे हैं। आप यहां जो मेहनत कर रहे हैं, उस ऊर्जा से भारत भी आगे बढ़ रहा है। इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत के बढ़ते हुए सामर्थ्य ने दुनिया को भी स्थायित्व और समृद्धि की उम्मीद दी है। दुनिया को लगा है कि भारत एक सक्षम और ग्लोबल ऑर्डर स्थापित करने में संकथित भूमिका निभा सकता है। भारत ने एक बहुत ही सफल जी-20 सम्मेलन आयोजित किया है। आज दुनिया के हर बड़े मंच पर भारत की आवाज सुनी जाती है। कहीं भी संकट आता है, तो सबसे पहले पहुंचने वाले देशों में भारत का भी नाम होता है। आज का मजबूत भारत कदम-कदम पर अपने लोगों के साथ खड़ा है। बीते 10 वर्षों में जहां भी विदेशों में बसे भारतीयों को समस्या आई, भारत सरकार ने तेजी से एक्शन लिया है। यूक्रेन, सूडान, यमन और दूसरे संकटों के दौरान फंसे हजारों भारतीयों को सुरक्षित निकाल कर भारत लाया गया है। आज भारतीय समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का है। वस्तुतः प्रवासी भारतीय भारत की नई ऊर्जावान शक्ति हैं। यूएई में करीब 35 लाख प्रवासी भारतीय रहते हैं और इन्होंने वर्ष 2023 में अपनी कमाई में से 20 अरब डॉलर से

अधिक रেমिटेंस भारत भेजी है। इस समय जब भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी डिजिटल अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में ऊंचाई प्राप्त कर चुका है और आगामी पांच वर्षों में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के सपने को साकार करने की डगर पर तेजी से आगे बढ़ रहा है ऐसे में यूएई सहित दुनियाभर के प्रवासी भारतीय अपनी मातृभूमि के लिए अधिक तत्परता के साथ योगदान देने के लिए आगे बढ़ते हुए दिखाई दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि हाल ही में विश्व बैंक के द्वारा जारी ‘माइग्रेसन एंड डेवलपमेंट ब्रीफ’ रिपोर्ट 2023 के मुताबिक विदेश में कमाई करके अपने देश में धन भेजने के मामले में वर्ष 2023 में भारतीय प्रवासी दुनिया में सबसे आगे रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2023 में प्रवासी भारतीयों ने करीब 125 अरब डॉलर की धनराशि स्वदेश भेजी है। इस रिपोर्ट के मुताबिक रमिटेंस प्राप्त करने में भारत ने मैक्सिको, चीन और फिलिपींस को बहुत पीछे छोड़ दिया है। टॉप-5 रमिटेंस प्राप्त करने वाले देशों में भारत के अलावा मैक्सिको (67 अरब डॉलर), चीन (50 अरब डॉलर), फिलीपींस (40 अरब डॉलर) और मिस्र (24 अरब डॉलर) शामिल हैं। रिपोर्ट से यह बात भी उभरकर सामने आई है कि पहले जहां भारत से अकुशल श्रमिक कम आय वाले खाड़ी देशों में जाते थे, वहीं अब विदेश जाने वाले भारतीयों में हाई स्किलड लोगों की संख्या ज्यादा है जो अमेरिका, इंग्लैंड, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे उच्च आय वाले देशों में जा रहे हैं। ऐसे में वे अधिक कमाई करके अधिक धन भारत भेज रहे हैं। उल्लेखनीय है कि दुनिया के भारतीय समुदाय के विभिन्न सभी वर्गों के द्वारा

भारत के विकास के लिए योगदान दिया जा रहा है। प्रवासी भारतीयों का सबसे बड़ा डायस्पोरा है जिसकी संख्या लगभग 3.2 करोड़ है। मोटे तौर पर प्रवासी भारतीयों में भारतवंशी (पर्सन ऑफ इंडियन ओरिजिन), नॉन रेसीडेंट इंडियन (एनआरआई) और ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया (ओसीआई) शामिल हैं। भारत के विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में भारतीय एनआरआई की संख्या करीब 1.34 करोड़ है और ये भारत में अपने संबंधित क्षेत्र में मतदान के पात्र हैं। सबसे ज्यादा प्रवासी भारतीय अमेरिका में रहते हैं। अमेरिका में विभिन्न प्रवासी समूहों में सबसे अधिक आय भारतीयों की है। भारतीय मूल के लोग अमेरिकी आबादी का एक प्रतिशत से थोड़ा अधिक हैं, वे संयुक्त राज्य अमेरिका के कर खजाने का 6 प्रतिशत हिस्सा हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है कि दुनिया के कोने-कोने में भारतवंशी और प्रवासी भारतीयों की राजनीतिक, आर्थिक और कारोबारी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती ऊंचाईयों भारत के तेज विकास के मद्देनजर महत्वपूर्ण हो गई हैं। दुनिया के अनेक देशों में कई और भारतवंशी राजनेता अपने-अपने देशों को आगे बढ़ाते हुए विश्व के समक्ष भारत के चमकते हुए चेहरे हैं। साथ ही ये विश्व मंच पर भारत के हितों के हिमायती भी हैं और हरसंभव तरीके से भारत के विकास में अपना अहम योगदान देते हुए भी दिखाई दे रहे हैं। इतना ही नहीं, दुनिया के विभिन्न देशों में राजनीति की ऊंचाइयों पर पहुंचने के साथ-साथ भारतवंशी व प्रवासी भारतीय वैश्विक आर्थिक व वित्तीय संस्थानों आईटी, कम्प्यूटर, मैनेजमेंट, बैंकिंग, वित्त आदि के क्षेत्र में भी

बहुत आगे हैं। इसमें कोई दो मत नहीं है कि भारतवंशियों और प्रवासी भारतीयों के लिए विदेशों की नई संस्कृति में ढलकर इस तरह की सफलता हासिल करना आसान नहीं होता है। ऐसे विभिन्न क्षेत्रों के चमकते सितारे अपनी चमक का लाभ मातृभूमि भारत के लिए भी विस्तारित कर रहे हैं। गौरतलब है कि अमेरिका सहित दुनिया के विभिन्न देशों में भारत को विकास की डगर पर आगे बढ़ाने के लिए भारत हितों की संगठन काम कर रहे हैं। पिछले वर्ष 2023 में भारत की जी-20 की अध्यक्षता और विगत 9-10 सितंबर को नई दिल्ली में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन को सफल बनाने में प्रवासी भारतीयों के संगठन ‘इंडियास्पोरा’ का अभूतपूर्व योगदान रहा है। इंडियास्पोरा भारत के विकास में अहम योगदान देने के उद्देश्य से वर्ष 2012 में अमेरिका में स्थापित एक ऐसी गैर-लाभकारी संस्था है, जो करीब 20 देशों में सक्रिय रूप से मजबूती के साथ काम कर रही है। यह संगठन दुनियाभर के विभिन्न देशों के प्रवासी भारतीयों के लिए भी प्रेरणादायी बन गया है। इस संगठन का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा भारत के बढ़ाए गए गौरव और प्रवासी भारतीयों के लिए किए गए विशेष प्रयासों से भारतवंशियों तथा प्रवासियों का भारत के लिए सहयोग और स्नेह लगातार बढ़ा है। ऐसे में अब भारत के तेज विकास और भारत को विकसित देश बनाने के लक्ष्य को पूरा करने के मद्देनजर भारतवंशियों व प्रवासियों द्वारा तन-मन-धन से आगे सहयोग करने के संकल्प के अभियान को इंडियास्पोरा द्वारा दुनियाभर में आगे बढ़ाया जा रहा है। हम उम्मीद करें कि इस समय यूएई की तरह दुनिया के कोने-कोने के देशों में प्रवासी भारतीय आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में अपना प्रभावी योगदान देते हुए वैश्विक मंच पर भी भारत के हितों की जोरदार हिमायत के साथ भारत के सहयोगी और सहभागी के रूप में रेखांकित होते हुए दिखाई दे रहे हैं, अब वे भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने के सपने को साकार करने के मद्देनजर और अधिक सहयोगी व सहभागी भूमिका के रूप में योगदान देते हुए दिखाई देंगे।

स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत विकसित हो रहे हिमाचल के दो शहरों के बजट की दास्तान यह समझाने में असमर्थ है कि भविष्य की तिजोरी में क्या छिपा है। घाटे के शहरों पर लादे गए प्रशासनिक व आर्थिक सपने के केवल सियासी ताजपोशी के मंसूबे बनकर रह गए हैं। आखिर नागरिक भागीदारी में धर्मशाला और शिमला जैसे शहरों का भविष्य पढ़ा कहा जाए। सिर्फ आंकड़ों के लाग-लेपट में शहरीकरण की यह तस्वीर धुंधली है। कम से कम राष्ट्रीय स्वच्छता के मानदंडों व सर्वेक्षणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिमला जैसे शहर की तहजीब भी अब इस काबिल नहीं कि मध्यप्रदेश के इंदौर जैसे शहर की ओर स्वच्छता की दृष्टि से आंख उठाकर देखा जा सके। क्या आने वाले वर्ष में गंदगी और कूड़ा-कंकट तस्वीर के दाग मिट जायेंगे। क्या ऐसे प्रयास या दावे शिमला व धर्मशाला के बजटों में हो रहे हैं। विडंबना यह है कि शहरी बजट की तालीर में ऊंचे सपने हैं ही नहीं और न ही हाल ही में आया सुक्खू सरकार का बजट बता रहा है कि प्रदेश के नगरों में नागरिक जीवन में सुधार आया कैसे। शिमला-धर्मशाला की स्थिति बेहतर हो सकती थी, लेकिन स्मार्ट सिटी परियोजना का कार्यान्वयन धोखा दे रहा और तालमेल की कमी ने इस वसंत को भी उजाड़ दिया। अगर हम शहरी आर्थिकी के हिसाब से हिमाचल के नगर निकायों की परवर्तिता करते, तो एक अलग मुकाम पर इसके जरिए रोजगार व व्यापार खड़ा होता। धर्मशाला जैसे नगर नगर निकाय को अपने अस्तित्व के आठ साल गुजारने के बाद भी मालूम नहीं है कि नई प्रबंधकीय व्यवस्था से ऐसा क्या अंतर आ गया। शहरों का कद जिन ग्रामीण इलाकों में फैल रहा है, जहां शहरी एक्सप्रेस को पेश करने के लिए सरकार की ओर से विशेष पैकेज होने चाहिए, ताकि मज्ज एरिया कानियमन तोत्रा से हो। शहरों के बीच कर ढांचे की दीवारें खड़ी करने देने से नगर नगरों के उद्देश्य ही खंडित होंगे। हिमाचल में शहरीकरण दो जमादो चार नहीं हो सकता और न ही यह मैदानी इलाकों की तरह का गणित है। जो प्रदेश कुछ समय पहले तक नब्बे फीसदी से भी अधिक भाग को ग्रामीण मानकर चल

रहा था, वहां यथार्थ में अब यह घटकर सत्तर प्रतिशत से भी कम है, लेकिन किसी भी सरकार ने आज तक शहरी आबादी का गणित बजट में नहीं किया। आज भी राजनीतिक नेतृत्व टीसीपी के दायरे से क्षेत्रों को हटाने की वकालत करता देखा जाता है। उदाहरण के लिए धर्मशाला के साथ लगते योरा छावनी क्षेत्र का प्रबंधन दशकों से एक खास सैन्य व नागरिक शहर के रूप में होता रहा, लेकिन अब इसे ग्रामीण मानकर राजनीति भरने की प्रसन्न हो जाए, वहां की व्यवस्था व गंदगी का आलम नरक में धकेल रहा है। इस क्षेत्र को धर्मशाला नगर निगम के सुपुर्द किया जाता, तो शहरी प्रबंधन की भली प्रसन्न हो जाए, वहां की अपनी मिलकीयत में दाग लगाने से बच जाता। शहरों की अगर ढंग से चिन्तित करें, तो विकास के मील पत्थर और आर्थिक वृद्धि की अधोसंरचना का विकास होगा। शहर अपनी कमाई का जरिया ढूंढ रहे हैं, लेकिन पार्श्वों का टोला हाथ आई सियासत को मुफ्त में खोना नहीं चाहते। नगर निगमों की संख्या में विस्तार का औचित्य पूरा करना है, तो उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता भी दिखाना होगा।

यह इसलिए कि शिमला के खाते में ग्रीन टैक्स दस करोड़ ला सकता है, तो इसी तर्ज पर धर्मशाला नगर निगम को भी ऐसी मेहनत करनी चाहिए। विडंबना यह है कि शहर अपनी भूमि, अपनी संपत्ति, अपनी साधना, अपनी क्षमता और अपनी वृद्धि का नुकसान कर रहे हैं और यह इसलिए हो रहा है क्योंकि शहर की काबिलीयत बढ़ाने के लिए जनता अभी पार्श्व में पड़ेगी। हर बड़े शहर को अगली सदी के मानचित्र में रंग भरने के लिए महत्वाकांक्षी परियोजनाओं, निजी निवेश के रास्ते पर चलते हुए अपनी संभावनाओं को रेखांकित करने के लिए भूमि बैंक बनाकर काम करना होगा। शहरी विकास के ढांचे में हिमाचल सरकार की भी विशेष प्रयास करने पड़ेंगे ताकि पर्यटन, मनोरंजन, इवेंट तथा व्यापार के क्षेत्र में नया रोजगार विकसित हो।

राय

एक जुट होता ‘इंडिया’

कुछ दिन पहले विपक्ष का जो ‘इंडिया’ गठबंधन बिखरता और समाप्त-सा लग रहा था, वह अचानक एक जुट होता लग रहा है। चुनावों से पहले यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम है। १३९ में ६३ सीटों पर समाजवादी पार्टी और १७ सीटों पर कांग्रेस का गठबंधन सुनिश्चित हो चुका है। अब ‘न्याय यात्रा’ में अखिलेश यादव और राहुल गांधी साथ-साथ दिखाई देंगे। दिल्ली, हरियाणा, गोवा, गुजरात और चंडीगढ़ की ४६ सीटों पर आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस के दरमियां गठबंधन घोषित हो चुका है। ‘आप’ हरियाणा में कुर्खेत्र, गुजरात में भरुच और भावनगर तथा दिल्ली का ४ संसदीय सीटों पर प्रत्याशी उतारेगा। शेष सीटें कांग्रेस लड़ेगी। बेशक पंजाब में दोनों दल अलग-अलग चुनाव में उतरेंगे। बिहार में लालू यादव के राजद, कांग्रेस और वामदलों में बुनियादी सहमतियां बन गई हैं। आगामी ३ मार्च को गठबंधन की अधिकृत घोषणा की जा सकती है। पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, झारखंड, जम्मू-कश्मीर की १४९ सीटों पर गठबंधन फिलहाल चुनौती बना है। इन राज्यों में कांग्रेस और अन्य दल गठबंधन में रहे हैं, लिहाजा देर-सबेर सीटों का बंटवारा घोषित किया जा सकता है। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने बंगाल की मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष ममता बनर्जी से गठबंधन की खातिर २-३ बार फोन पर चर्चा की है। तृणमूल ने कांग्रेस को मात्र २ सीटें देने की बार-बार बात कही है, जबकि कांग्रेस ६ सीटों पर दावा कर रही है। यह भी सहमति बन सकती है कि कांग्रेस असम और मेघालय में १-१ सीट तृणमूल के लिए छोड़ सकती है। फिलहाल ममता का रुख कड़ा है, लेकिन दोनों के बीच जड़ता की स्थितियां नहीं हैं। प्रख्यात चुनाव विशेषज्ञों के आकलन हैं कि यदि कांग्रेस और तृणमूल में गठबंधन हो गया, तो बंगाल में भाजपा की १८ सीटें घटकर इकाई में पहुंच सकती हैं। यह राजनीति ममता भी समझती होंगी! हालांकि वैसे आसार नहीं हैं कि भाजपा-एनडीए के खिलाफ विपक्ष का एक ही, साझा उम्मीदवार चुनाव में उतर सके। यह सुझाव बिहार के मुख्यमंत्री एवं जद-यू के अध्यक्ष नीतीश कुमार का था, किन्होंने सबसे पहले विपक्षी दलों को लामबंद करना शुरू किया था। अब तो वह खुद ही पाला बदल कर, भाजपा के साथ गठबंधन बना, सरकार बना चुके हैं। बहरहाल ऐसा बताया जा रहा है कि ३५० से अधिक सीटों पर ‘मोदी बनाम इंडिया’ के समीकरण बनाने पर विपक्ष विमर्श कर रहा है। इनमें २०० से अधिक सीटों पर ‘भाजपा बनाम कांग्रेस’ के समीकरण प्रत्यक्ष होंगे। विपक्षी गठबंधन के लिए महाराष्ट्र सबसे महत्वपूर्ण राज्यों में एक है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे के अलावा, राहुल गांधी ने भी शरद पवार और उद्धव ठाकरे से फोन पर बातचीत कर गठबंधन की सीटें तय करने के अनुरोध किए हैं। हालांकि कुछ राज्यों में वामपंथी दल भी कांग्रेस के साथ गठबंधन में शामिल हैं, लेकिन केरल में उन्होंने अपने मोर्चे में सभी २० सीटें बांट ली हैं। वहां कांग्रेस का प्रतिद्वंद्वी मोर्चा है। केरल के अलावा, जम्मू-कश्मीर में फारूक अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती के दलों ने ‘इंडिया’ से अलग चुनाव लड़ने की घोषणाएं की हैं। हालांकि दोनों ही दल, पहले दिन से, ‘इंडिया’ के घटक रहे हैं। बेशक विपक्षी गठबंधन आकार लेता हुआ दिख रहा है, लेकिन अभी जीत की संभावनाएं बहुत दूर हैं। हालांकि गठबंधन के विरोधाभास भाजपा-एनडीए में भी हैं, लेकिन वहां भाजपा अकेली ही बहुमत प्राप्त करने की स्थिति में है। वहां नेतृत्व और नीति प्रधानमंत्री मोदी की है, लिहाजा ‘इंडिया’ जैसी मुश्किल नहीं है।

विचार

वीर शब्द का उल्लेख १९२३ में श्री वैशम्पायन की एक कविता में विनायक दामोदर सावरकर के लिए किया गया था। उसी वर्ष श्री राजवाड़े की एक अन्य कविता में भी उन्हें वीर कहा गया। वीर सावरकर जी महान स्वतंत्रता सेनानी थे। अंग्रेज उनसे सर्वाधिक भयभीत रहते थे।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में वीर सावरकर ने अपने बहुमुखी योगदान से राष्ट्र के इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी। हिंदुत्व की अवधारणा को व्यक्त करने से लेकर नेता जी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व वाली आजाद हिंद सेना में उनकी भूमिका तक, सावरकर का जीवन और विचारधारा राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन पर चर्चाओं को प्रेरित और उत्तेजित करते रहे हैं। सावरकर ने हिंदुत्व को भारत के इतिहास में विदेशी हमलों, उपनिवेशवाद और धार्मिक रूपांतरणों से उत्पन्न चुनौतियों की प्रतिक्रिया के रूप में देखा। उन्होंने हिंदुओं को अपनी सांस्कृतिक पहचान पर जोर देने और सांस्कृतिक एकरूपता या हासिए पर धकेलने के प्रयासों का विरोध करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सावरकर के हिंदुत्व ने हिंदुओं के बीच गर्व और आत्मविश्वास पैदा करने की कोशिश की, जिससे उन्हें अपने जीवन के तरीके के लिए आंतरिक और बाहरी चुनौतियों का सामना करने के लिए सशक्त बनाया गया। ‘विनय न मानत जलधि जड, गय तीन दिन बीत। बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति।’ वैसे तो रामचरितमानस की यह चौपाई तब की है जब लंका पर चढ़ाई करने जा रहे भगवान राम समुद्र से लंका जाने के लिए मार्ग देने का आग्रह कर रहे थे। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम की परिस्थिति में यह नेता जी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज के प्रेरणास्रोत स्वातंत्र्यवीर वीर सावरकर इतिहास

के सचेत अध्ययन से वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि युद्ध के बिना स्वाधीनता संभव नहीं पर बखूबी फिट बैठती है। स्वातंत्र्यवीर वीर सावरकर नेता जी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज के प्रेरणास्रोत थे। उन्होंने रण की संकल्पना का ब्लूप्रिंट भी तैयार किया। बाद में इसी के आधार पर आजाद हिंद फौज का गठन हुआ। जब हम आजाद हिंद फौज की चर्चा करते हैं तो बात नेता जी सुभाषचंद्र बोस से आरंभ होकर रासबिहारी बोस तक आकर रुक जाती है। इस सेना के निर्माण में जिनकी बुनियादी भूमिका रही, कृतिशील सहयोग रहा, उन वीर सावरकर को हम सहसा भूल जाते हैं। उनका रोम-रोम राष्ट्र को समर्पित था। वे अखंड भारत के पैरोकार व पक्षधर थे। उन्होंने अपनी प्रखर मेधा शक्ति, ताकिक-तथ्यात्मक विवेचना के बल पर १८५७ के विद्रोह को ‘प्रथम स्वतंत्रता संग्राम’ की संज्ञा दिलवाई। उनके अनुसार कानून की दृष्टि में सभी नागरिकों को समान होना चाहिए। न किसी की उपेक्षा, न किसी को विशेषाधिकार। जो भी भारतवर्ष को अपनी पुण्यभूमि-पितृभूमि मानता हो, वह भारतवासी है। संपूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन में सावरकर जैसी प्रखरता, ताकिकता एवं तेजस्विता अन्यत्र कम ही दिखाई पड़ती है। लोकमान्य तिलक के प्रयासों से उन्हें श्याम जी कृष्ण वर्मा छात्रवृत्ति मिली और वे वकालत की पढ़ाई के लिए भारत से लंदन गए। लंदन में भी उन्होंने फ्री इंडिया सोसाइटी का गठन कर संपूर्ण भारतवर्ष से अध्ययन के लिए वहां पहुंचने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के बीच भारत की स्वतंत्रता हेतु प्रयास जारी रखा। ब्रिटिश दस्तावेजों को खंगाल उन्होंने ‘१८५७ का स्वातंत्र्य समर’ नामक महत्वपूर्ण एवं शोधपूर्ण पुस्तक लिखी। यह दुनिया की पहली ऐसी पुस्तक थी जिसे ब्रिटिश सरकार ने प्रकाशित होने से पूर्व ही प्रतिबंधित कर दिया। कुछ राजनीतिक दलों एवं विचारधाराओं ने निहित स्वाधीन की पूर्ति के लिए उनके माफीनाम के रूप

शव संवाद-३२

पहुंच गया था। तब से यह नाता जुड़ गया। बुद्धिजीवी के लिए नैतिकता, देशभक्ति, राष्ट्र प्रेम और समाज के सारे प्रश्न अब कुत्ते की प्रवृत्ति पर टिके थे। कुत्ते के भौंकने मात्र से बुद्धिजीवी को लगता कि एक वही नहीं, पूरा देश सुरक्षित है। आवारा कुत्ते के कायाकल्प पर पालतू कुत्तों के मालिक हैं मान हैं, क्योंकि बहस अब यह चल पड़ी कि ज्यादा वफादार कौन – पालतू या आवारा। कुत्ते की वफादारी भौंकने से है, इसलिए पालतू फेल होने लगे। पालतू बेवश मालिक का आदेश मानते। उनके कहने पर उठते-बैठते, करतब दिखाते,

लेकिन अपनी मर्जी से भौंक भी नहीं पाते, बल्कि मालिक को पहले भौंकना पड़ता है ताकि पालतू अनुसरण करें। अब बुद्धिजीवी इसी फार्मूले से इनसानों में आवारा व पालतू का भेद समझने लगा है। वह राजनीति से पत्रकारिता तक और प्रशासन से समाज तक पालतू ही पालतू देख रहा है। यही वजह है कि या तो वह खुद या उसके द्वारा अपनाया गया आवारा कुत्ता ही देश के लिए कुत्ता शहर में निकल गया। वह हर पालतू को देखकर भौंक रहा था। अंततः वह अखबार कार्यालय के बाहर रद्दी अखबार को देख गुस्सा गया। उस हर शब्द पालतू दिखाई दे रहा था। वह पालतू जैसी खबरों से भरी रद्दी को चबाते-

चबाते भूल गया कि अंततः ऐसी सफाई से उसे ही मरना पड़ेगा। पेट में जाते ही पालतू खबरों ने उसे मार दिया। किसी ने खबर दी तो बुद्धिजीवी दूंदते-दूंदते वहां पहुंच गया, जहां लोग चर्चा कर रहे थे कि रद्दी ने कुत्ते को मारा या खबर कातिल थी। तभी भीड़ से कोई चीखा, ‘जरूर कुत्ते का मालिक इसे खबर और जहर में अंतर नहीं सिखा पाया होगा।’ अनसुना करते हुए बुद्धिजीवी ने कुत्ते के मुंह में फंसी अखबार खींच डाली। मुंह से निकली अखबार की मुख्य खबर थी, ‘हर तरह के विपक्ष को घुस कर मारेंगे।’ कुत्ते के शव में बुद्धिजीवी को पहली बार देश का भविष्य नजर आ रहा था। -क्रमशः

निर्मल असो

राष्ट्रीय एकता के लिए वीर सावरकर का दृष्टिकोण



में प्रचारित कर उनकी छवि को चोट पहुंचाने की चेष्टा की। सत्य कुछ भिन्न एवं इतर होने के बावजूद, राजनीतिक क्षेत्र में आरोप लगाओ और भाग जाओ की प्रवृत्ति प्रचलित रही है। उसके लिए आवश्यक प्रमाण प्रस्तुत करने का आदर्श नहीं सामने नहीं रखता। क्या उन आरोपों को तर्कों एवं तथ्यों की कसौटी पर नहीं कसा जाना चाहिए? वीर सावरकर के विचारों के अनुसार हिंदुत्व का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति जो सिन्धु से समुद्र तक फैली भारतभूमि को साधिकार अपनी पितृभूमि एवं पुण्यभूमि मानता है, वह हिन्दू है। सावरकर सभी भारतीय धर्मों को शब्द ‘हिन्दुत्व’ में शामिल करते हैं तथा हिन्दू राष्ट्र का अपना दृष्टिकोण पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैले अखण्ड भारत के रूप में प्रस्तुत करते हैं। भारतीय राष्ट्रवादी इतिहास में स्वातंत्र्यवीर सावरकर पहले भारतीय थे जिन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग की। वे भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सन-१८५७ की लड़ाई को भारत का

प्रथम स्वाधीनता संग्राम बताते हुए १९०७ में लगभग एक हज़ार पृष्ठों का इतिहास लिखा। १८९९ में, जब वे केवल १६ वर्ष के थे, सावरकर ने मित्र मेला नामक एक समूह का गठन किया, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना था। बाद में समूह का नाम बदलकर अभिनव भारत कर दिया गया। १९०६ में सावरकर लंदन चले गए और वहां भी अपना मिशन जारी रखा। स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन की आलोचना की और हिंदुओं से युद्ध प्रयासों में सक्रिय रहने और सरकार की अवज्ञा न करने को कहा। उन्होंने हिंदुओं से युद्ध की कला सीखने के लिए सारस्वत बलों में भर्ती होने का भी आग्रह किया। अगर दो टुक कहा जाए तो सावरकर ने कभी भी अंग्रेजों से माफी नहीं मांगी थी। जिस व्यक्ति ने दस साल सेलुलर जेल की अमानवीय यातनाएं सही हों, उसके विषय में ‘माफीनाम’ या ‘दया याचिका’ की बात करना आश्चर्यजनक लगता

है। वीर शब्द का उल्लेख १९२३ में श्री वैशम्पायन की एक कविता में विनायक दामोदर सावरकर के लिए किया गया था। उसी वर्ष श्री राजवाड़े की एक अन्य कविता में भी उन्हें वीर कहा गया। वीर सावरकर जी महान स्वतंत्रता सेनानी थे। अंग्रेज उनसे सर्वाधिक भयभीत रहते हैं। अंग्रेजों से माफी नहीं मांगी थी। जिस व्यक्ति ने दस साल सेलुलर जेल की अमानवीय यातनाएं सही हों, उसके विषय में ‘माफीनाम’ या ‘दया याचिका’ की बात करना आश्चर्यजनक लगता



पूर्व मंत्री और बिजेड़ी नेता देबाशिश नायक बीजेपी में शामिल हो गईं



मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओइशिश

भुवनेश्वर : पूर्व मंत्री एवं बीजेडी के संस्थापक सदस्य एवं बरी के पूर्व विधायक देबाशिश नायक आज प्रदेश की राजधानी में आयोजित विलय उत्सव में औपचारिक रूप से भाजपा में शामिल हो गये।बीजू महिला जनता दल की पूर्व राज्य महासचिव सुश्री ज्योत्सनारानी जेना अपने समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हो गई हैं।स्थापित डुमनी न्यूज के प्रधान संपादक श्री अक्षय कुमार पटनायक, प्रमुख वकील और सामाजिक कार्यकर्ता दीपक कुमार साहू, पितवासा पांडा, पद्मलोचन नंद, सुश्री गायत्री प्रियधारीनी आधिकारिक तौर पर भाजपा में

शामिल हो गए हैं।

कालाहांडी जिले के लांजीगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस नेता चचेनरी माझी, राजेंद्र माली, हरिहर कुमार, थार्टर, पुटेल, रबींद्र कुमारी प्रधारी, हादीबंधु नाइक, यशवंत बेहरा और बीजेजे नेता विनोद गायद, तंखर कदमबाला मुख्य रूप से भाजपा में शामिल हो गए हैं। जगतसिंहपुर जिले के निवासी और सेवानिवृत्त प्रशासक कुलमणि बिस्वाल आज भाजपा में शामिल हो गये।

प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल एवं पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री समीर मोहंती ने भाजपा में शामिल हुए नये सदस्यों को पार्टी का टोपी पहनाकर स्वागत किया।

दिव्यांगों के लिए आरक्षण संबंधी याचिका सुप्रीम कोर्ट से खारिज, लोकसभा चुनावों में की गई थी आरक्षण की मांग

दोहा,लघुकथा,और भूटान यात्रा पुस्तक विरोचन



परिवहन विशेष।एसडी सेठी।हिंदुस्तानी भाषा अकादमी ने रोहिणी स्थित सभागार में सरस्वती सुमन पत्रिका के भूटान यात्रा संस्मरण अंक विमोचन और दोहा, लघुकथा पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलित कर की गई।इस मौके पर दिल्ली एनसीआर समेत देश के विभिन्न राज्यों से चयनित श्रेष्ठ प्रतिभाओं को उनकी रचना पाठ के लिए प्रमाण पत्र, स्मृति चिन्ह वहीं लघुकथा वाचको को नगद राशि देकर सम्मानित किया गया।कार्यक्रम के गेस्ट के बतौर साहित्यकार, कलाकर्मियों में जयसिंह आर्य, राम रामअवतार बैरवा, आदित्य वर्मा जलज व अजय मनचंदा तथा कलमकार राजवरत आर्य भी उपस्थित थे।हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष सुधाकर पाठक ने भूटान यात्रा संस्मरण पर चर्चा की साथ ही भूटान यात्रा अंक पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. आनंद सुमन सिंह, , दोहा, लघुकथा प्रतियोगिता के बतौर जज डॉ. अशोक मैत्रेय, विनीता निर्झर का आभार जताया। सम्मानित होने वाले प्रतिभागियों में आर एस मेहता, सरिता भाटिया, विनोद पराशर, सुनीता अग्रवाल, तुलिका सेठ, शशि किरण, मीनू पांडे, नमिता राकेश आदि प्रमुख थे।

सुप्रीम कोर्ट ने लोकसभा में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षण की मांग करने वाली एक जनहित याचिका सोमवार को यह कहते हुए खारिज कर दी कि न्यायपालिका नीतिगत फैसलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ जस्टिस जेबी पांडीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि हम चुनावों में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षण का आदेश नहीं दे सकते।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने लोकसभा में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षण की मांग करने वाली एक जनहित याचिका सोमवार को यह कहते हुए खारिज कर दी कि न्यायपालिका नीतिगत फैसलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पांडीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने कहा कि हम चुनावों में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षण का आदेश नहीं दे सकते। यह पूरी तरह से एक नीतिगत मामला है। इसे खारिज कर दिया गया है।

पीठ ने जनहित याचिका में दलील पर सवाल उठाया
पीठ ने जनहित याचिका में इस दलील पर भी सवाल उठाया कि उम्मीदवारों को नामांकन फॉर्म में अपनी दिव्यांगता की



स्थिति के बारे में खुलासा करने के लिए कहा जाना चाहिए। पीठ ने पूछा कि नामांकन फॉर्म में यह खुलासा क्यों किया जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति दिव्यांग है।

जयंत राघव ने दायर की थी जनहित याचिका
जनहित याचिका दिल्ली के द्वारका निवासी जयंत राघव की ओर से दायर की गई थी।

याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में केंद्र सरकार, चुनाव आयोग और छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान के चुनाव निकायों को पक्षकार बनाया था।

महारथी कर्ण के कवच कुण्डल का रहस्य

एक असुर था, दम्बोद्धव। उसने सूर्यदेव की बड़ी तपस्या की। सूर्य देव जब प्रसन्न हो कर प्रकट हुए और वरदान मांगने को कहा तो उसने र अमरत्वश्चक्र का वरदान माँगा।

सूर्यदेव ने कहा यह संभव नहीं है। तब उसने माँगा कि उसे एक हजार दिव्य कवचों की सुरक्षा मिले। इनमे से एक भी कवच सिर्फ वही तोड़ सके जिसने एक हजार वर्ष तपस्या की हो और जैसे ही कोई एक भी कवच को तोड़े, वह तुरंत मृत्यु को प्राप्त हो।

सूर्यदेवता बड़े चिंतित हुए। वे इतना तो समझ ही पा रहे थे कि यह असुर इस वरदान का दुरुपयोग करेगा, किन्तु उसकी तपस्या के आगे वे मजबूर थे। उन्हें उसे यह वरदान देना ही पड़ा। इन कवचों से सुरक्षित होने के बाद वही हुआ जिसका सूर्यदेव को डर था। दम्बोद्धव अपने सहस्र कवचों की सहायता से अपने आप को अमर मान कर मनचाहे अत्याचार करने लगा। वह सहस्र कवचर्च नाम से जाना जाने लगा। उधर सती जी के पिता रदक्ष प्रजापतिर ने अपनी पुत्री रमूर्तिर का विवाह बहमा जी के मानस पुत्र रधर्मर से किया। मूर्ति ने सहस्रकवच के बारे में सुना हुआ था और उन्होंने भी विष्णु से प्रार्थना की कि इसे खत्म करने के लिए वे आये। विष्णु जी ने उसे आश्वासन दिया कि वे ऐसा करेंगे।

समयक्रम में मूर्ति ने दो जुड़वा पुत्रों को जन्म दिया जिनके नाम हुए नर और नारायण। दोनों दो शरीरों में होते हुए भी एक थे, दो शरीरों में एक आत्मा। विष्णु जी ने एक साथ दो शरीरों में नर और नारायण के रूप में अवतरण किया था। दोनों भाई बड़े हुए। एक बार दम्बोद्धव इस वन पर चढ़ आया। तब उसने एक तेजस्वी मनुष्य को अपनी ओर आते देखा और भय का अनुभव किया। उस व्यक्ति ने कहा कि मैं रनरर हूँ, और तुमसे युद्ध करने आया हूँ। भय होते भी दम्बोद्धव



ने हंस कर कहा, तुम मेरे बारे में जानते ही क्या हो? मेरा कवच सिर्फ वही तोड़ सकता है जिसने हजार वर्षों तक तप किया हो। नर ने हंस कर कहा कि मैं और मेरा भाई नारायण एक ही हैं, वह मेरे बदले तप कर रहे हैं, और मैं उनके बदले युद्ध कर रहा हूँ। युद्ध शुरू हुआ, और सहस्र कवच को आश्चर्य होता रहा कि सच ही में नारायण के तप से नर की शक्ति बढ़ती चली जा रही थी। जैसे ही हजार वर्ष का समय पूर्ण हुआ, नर ने सहस्र कवच का एक कवच तोड़ दिया। लेकिन सूर्य के वरदान के अनुसार जैसे ही कवच टूटा, नर मृत हो कर वहीं गिर पड़े। सहस्र कवच ने सोचा, कि चलो एक कवच गया ही सही किन्तु यह तो मर ही गया।

तभी उसने देखा कि नर उसकी ओर दौड़े आ रहा है, और वह चकित हो गया। अभी ही तो उसके सामने नर की मृत्यु हुई थी और अभी ही यही जीवित हो मेरी ओर केसे दौड़ा आ रहा है?

लेकिन फिर उसने देखा कि नर तो मृत पड़े हुए

थे, यह तो हुबहु नर जैसे प्रतीत होते उनके भाई नारायण थे, जो दम्बोद्धव की ओर नहीं, बल्कि अपने भाई नर की ओर दौड़ रहे थे।

दम्बोद्धव ने अट्हास करते हुए नारायण से कहा कि तुम्हें अपने भाई को समझाना चाहिए था, इसने अपने प्राण व्यर्थ ही गँवा दिए।

नारायण शांतिपूर्वक मुस्कुराए। उन्होंने नर के पास बैठ कर कोई मन्त्र पढ़ा और चमत्कारिक रूप से नर उठ बैठे। तब दम्बोद्धव की समझ में आया कि हजार वर्ष तक शिवजी की तपस्या करने से नारायण को मृत्युंजय मन्त्र की सिद्धि हुई है, जिससे वे अपने भाई को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

अब इस बार नारायण ने दम्बोद्धव को ललकारा और नर तपस्या में बैठे। हजार साल के युद्ध और तपस्या के बाद फिर एक कवच टूटा और नारायण की मृत्यु हो गयी।

फिर नर ने आकर नारायण को पुनर्जीवित कर

दिया, और यह चक्र फिर फिर चलता रहा।

इस तरह ९९९ बार युद्ध हुआ। एक भाई युद्ध करता दूसरा तपस्या। हर बार पहले की मृत्यु पर दूसरा उसे पुनर्जीवित कर देता।

जब 999 कवच टूट गए तो सहस्रकवच समझ गया कि अब मेरी मृत्यु हो जायेगी। तब वह युद्ध त्याग कर सूर्यलोक भाग कर सूर्यदेव के शरणगत हुआ।

नर और नारायण उसका पीछा करते वहाँ आये और सूर्यदेव से उसे सौंपने को कहा। किन्तु अपने भक्त को सौंपने पर सूर्यदेव राजी न हुए। तब नारायण ने अपने कमंडल से जल लेकर सूर्यदेव को श्राप दिया कि आप इस असुर को उसके कर्मफल से बचाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसके लिए आप भी इसके पापों के भागीदार हुए और आप भी इसके साथ जन्म लेगे इसका कर्मफल भोगने के लिए।

इसके साथ ही त्रेतायुग समाप्त हुआ और द्वारप का प्रारम्भ हुआ।

समय बाद कुंती जी ने अपने वरदान को जांचते हुए सूर्यदेव का आवहन किया, और कर्ण का जन्म हुआ। लेकिन यह आम तौर पर ज्ञात नहीं है, कि कर्ण सिर्फ सूर्यपुत्र ही नहीं है, बल्कि उसके भीतर सूर्य और दम्बोद्धव दोनों हैं। जैसे नर और नारायण में दो शरीरों में एक आत्मा थी, उसी तरह कर्ण के एक शरीर में दो आत्माओं का वास है; सूर्य और सहस्रकवच। दूसरी ओर नर और नारायण इस बार अर्जुन और कृष्ण के रूप में आये।

कर्ण के भीतर जो सूर्य का अंश है, वही उसे तेजस्वी वीर बनाता है। जबकि उसके भीतर दम्बोद्धव भी होने से उसके कर्मफल उसे अनेकानेक अन्याय और अपमान मिलते हैं, और उसे द्रौपदी का अपमान और ऐसे ही अनेक अपकर्म करने को प्रेरित करता है।

चामराजपेट शीतल नाथ श्वेतांबर जैन संघ में मुनि राजपद्मसागरजी का संयम रजत उत्सव मनाया

परिवहन विशेष न्यूज

बेंगलूरु: श्री शीतल नाथ श्वेतांबर जैन संघ ट्रस्ट चामराजपेट बेंगलूरु में मुनि राजपद्मसागरजी महाराज का संयम जीवन के 25 वर्षों की उजवनी की महाराज साहब दीक्षा दिवस की शुभकामना देने के लिए बहुत सारे संघ एवं श्रावक श्राविकाओं की उमटी भीड़ श्रावक श्राविकाओं ने अपने भावों को गुरुदेव के संयम जीवन की गुणों की अनुमोदना की, अनेक संघ से सभी ने अपने वक्तव्य को गुरु के चरणों में समर्पित किया, और मुनि राजपद्मसागरजी ने कहा की साधु के दर्शन से पुण्य का उपार्जन होता है, साधु को देखना

मंगल, साधु को सुनना मंगल, साधु के पास में बैठने में आनंद, क्योंकि साधु का जीवन है निष्पाप जीवन होता है, हमेशा सभी जीवों को कष्ट नहीं पहुंचाते, वैसे एकेंद्रीय से लगाकर के पांच इंद्रियों जीवों की रक्षा करने वाले सभी जीवों की रक्षा करने वाले साधु होते हैं, साधु के दर्शन से इलायची कुमार को केवल ज्ञान के प्राप्ति हुई साधु के दर्शन से उदयन मंत्री को समाधि की प्राप्ति हुई, साधु के दर्शन साधु के वंदन से कृष्ण महाराज की नरक टल गई, ऐसा होता है साधु जीवन। मुनि श्रमणपद्मसागरजी ने भी कहा कि गुना की अनुमोदना करने से हमारा में रहे हुए दोष दूर होते हैं

और गुणों की प्राप्ति होती है, और ऐसे सुनि श्री राजपद्मसागर जी महाराज का दीक्षा दिवस है....और गुरुदेव को का खोरांने (ओढ़ाने) के लाभार्थी हीराचंद पद्मबेन पूनमभाई बुरई एवं गुरु पूजन के लाभार्थी कानमल विजयराज मोंडिया सोनी परिवार ने लाभ लिया। बाल्यवय में साधु जीवन स्वीकार करते हुए श्री संघ एम गुरु के चरणों में जीवन समर्पित किया। पूज्य गुरुदेव मुनि राजपद्मसागरजी महाराज के 25 वें दीक्षा दिन के भव्य उत्सव में गुणों की अनुमोदना करने में सभी श्री संघ एवं श्रावक श्राविकाओं सहभागी बने।

'अगर आप नहीं कर सकते, तो हम करेंगे...' महिला तटरक्षकों की स्थायी नियुक्ति मामले में सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को दी चेतावनी

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार पर दबाव बनाते हुए कहा कि सुरक्षा बल भारतीय तटरक्षक दल में महिलाओं की स्थायी नियुक्ति को मंजूरी देना सुनिश्चित करे क्योंकि उनको अलग-थलग नहीं किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि खंडपीठ ने भारतीय तटरक्षक अधिकारी प्रियंका त्यागी की याचिका पर सुनवाई करते हुए पहले केंद्र सरकार से कहा था कि आप नारी शक्ति की बात करते हैं उसे इस मामले में करके दिखाइये।

दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार पर दबाव बनाते हुए कहा कि सुरक्षा बल भारतीय तटरक्षक दल में महिलाओं की स्थायी नियुक्ति को मंजूरी देना सुनिश्चित करे क्योंकि उनको अलग-थलग नहीं किया जा सकता है। अगर सरकार ऐसा नहीं करती है तो फिर अदालत करेगी। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पांडीवाला और मनोष मिश्रा की खंडपीठ ने सोमवार को

मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि अटार्नी जनरल आर.वेक्टरमानी के जवाब में बताया गया है कि शार्ट सर्विस कमीशन अफसरों (एसएससीओ) के लिए स्थायी नियुक्ति को मंजूर करने में कुछ तकनीकी और व्यवहारिक अड़चने हैं।

दलीलों को 2024 में ठोस या वैध आधार नहीं माना जा सकता
इस पर सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा कि व्यवहारिका आदि की दलीलों को 2024 में ठोस या वैध आधार नहीं माना जा सकता। महिलाओं को अलग-थलग नहीं किया जा सकता है। इसलिए इस पहलु पर गौर करें। इस पर अटार्नी जनरल ने खंडपीठ को बताया कि भारतीय तटरक्षक (आईसीजी) ने इस मुद्दे पर विचार करने के लिए एक बोर्ड का गठन किया है। खंडपीठ ने कहा कि उम्मीद करते हैं कि आपके बोर्ड में महिलाएं होंगी।



इसके बाद सोमवार को समय की कमी के चलते अगली सुनवाई के लिए शुक्रवार का समय निर्धारित किया गया है। उल्लेखनीय है कि खंडपीठ ने भारतीय तटरक्षक अधिकारी प्रियंका त्यागी की याचिका पर सुनवाई करते हुए पहले केंद्र सरकार से कहा था कि आप नारी शक्ति की बात करते हैं, उसे इस मामले में करके दिखाइये। इस

मामले में आपको आंका जाएगा।
आपको महिलाओं के लिए उचित नीति को लेकर आना होगा
आपको महिलाओं के लिए उचित नीति को लेकर आना होगा। इससे पहले की सुनवाई में तटरक्षक की ओर से अदालत को बताया गया था कि केवल दस प्रतिशत महिलाओं को ही स्थायी नियुक्ति दी जा सकती है। इस पर अदालत ने

पूछा था कि भारतीय तटरक्षक बल केवल दस प्रतिशत की ही बात क्यों कर रहा है, क्या महिलाओं को कमतर आंका जा रहा है? सर्वोच्च अदालत ने आइसीजी से पूछा कि जब भारतीय नौसेना महिलाओं को स्थायी नियुक्ति के तहत भरती करती है तो केंद्र सरकार इस मुद्दे में लैंगिक समानता की नीति क्यों नहीं अपना सकती है।